Notes

7- ज्ञाता का घटना से सम्पर्क— ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि ज्ञाता उस घटना या परिस्थिति के सम्पर्क में हो सम्पर्क के अभाव में ही ज्ञान नही हो सकता
जैसे- किसी बालक को ताजमहल के बारे में पूछा था यह कहा और कैसा है। इसके बारे में पूर्ण जानकारी के लिए ताजमहल के सम्पर्क में होना आवश्यक है। यह सम्पर्क प्रत्यक्ष रूप से हो सकता है। या किसी माध्यम से हो सकता है। बालक को ताज महल के पास लेकर जाया जा सकता तथा उसको मौखिक रूप से चित्रो के माध्यम से बताया जा सकता है तथा बालक को ताजमहल के बारे में परिचय कराया जा सकता है।

8- ज्ञान परिवर्तनशील है— ज्ञान के समय यह आवश्यक है। बालक के परिस्थिति के अनुसार जैसा ज्ञान दिया जाता है। बालक के अन्दर जैसा वैसा ही परिवर्तन आता है। शिक्षक अपने व्याख्यान के माध्यम से छात्रो को परिवर्तनशील करता है। प्रत्येक शिक्षाशास्त्री बालकेन्द्रित शिक्षा के विषय ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। तथा व्याख्यान विधि के स्थान पर बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों का विकास होता है।
जैसे प्रायोजना विधी तथा समस्या समाधान विधि आदि
इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान भी समय के अनुसार ~~परिवर्तन~~ परिवर्तित होता है।

9- ज्ञान परिस्थितिजन्य है— अनेक परिस्थितियों में ज्ञान परिस्थिति जन्य होते है। अनेक परिस्थितियों का रूप भिन्न रूप में प्रकट होते है।

Scanned with CamScanner

Notes

इसी प्रकार ज्ञान की वस्तुओं को प्रकाशित करता है।

ज्ञान का अर्थ :- सामान्य रूप से ज्ञान एक जटिल तथ्य के रूप

प्रस्तुत किया जाता है। तथा यह स्पष्ट किया जाता ज्ञान प्राप्त करना सरल नहीं है। ज्ञान को प्राप्त करने में अनेक जन्म बीत जाते हैं। इस प्रकार की अवधारणा समाज में सामान्य रूप से प्रचलित है। ज्ञान की दूसरी अवधारणा के रूप में सामान्य वस्तु है इसे प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता होती है।

इस अवधारणा के आधार पर ज्ञान को दो भागों में बाँट सकते हैं।

(1) विशिष्ट ज्ञान

(2) सामान्य ज्ञान

विशिष्ट ज्ञान :- विशिष्ट ज्ञान के अन्तर्गत उस ज्ञान को सम्मिलित किया जाता है। जो आत्मा, परमात्मा, तथा आध्यात्मिक जगत से सम्बन्धित होता है। दूसरे शब्दों में इस ज्ञान का का सम्बन्ध परा लौकिक जगत में होता है। इस ज्ञान की प्राप्ति करने के लिए व्यक्ति को जन्मोतक परिश्रम एवं साधना करनी पड़ती है।

सामान्य ज्ञान :- सामान्य ज्ञान के अंतर्गत उन सभी भौतिक वस्तुओं का ज्ञान सम्मिलित होता है जिन्हें हम प्रत्यक्ष रूप में तथा शाब्दिक रूप में प्राप्त करते हैं।

Scanned with CamScanner

Notes

4- विशिष्ट ज्ञान का सम्बन्ध विशिष्ट व्यक्तियों से है व्यक्ति द्वारा किया जाता है जैसे - योग साधना, तपस्या एवं ध्यान आदि क्रियाएं सम्पन्न करना

5- विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त करने में अधिक समय लगता है। यह कठिन होता है।

6- आध्यात्मिक ज्ञान का उपयोग आत्मा की शान्ति हेतु किया जाता है।

7- विशिष्ट ज्ञान में अनुभव, तर्क एवं चिन्तन की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है।

ज्ञान की विशेषताएँ -

ज्ञान की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित रूप से स्पष्ट की जाती हैं।

1- ज्ञान का सम्बन्ध चेतन से है। - ज्ञान का सम्बन्ध चेतन जगत से होता है ज्ञान के सम्बन्ध में चेतना की आवश्यकता होती है। पूर्ण रूप से विचार किया जाये तो ज्ञान मानव जीवन का एक अंग है। जानवरों के सम्बन्ध में ज्ञान को एक सीमा तक इस रूप में स्वीकार किया जाता है। अनेक अवसरों पर जानवरों को भी ज्ञान होता है। जैसे- आपस में प्रेम का प्रदर्शन करना, आपस में सम्प्रेषण स्थापित करना, खुश होकर जंगल में मयुर नृत्य करना, आदि,

दूसरे शब्दों में मानव में ज्ञान का स्तर उच्च श्रेणी का होता है। तथा जानवरों में ज्ञान निम्न श्रेणियों का होता है। इस प्रकार मानव के ज्ञान का क्षेत्र व्यापक

ज्ञान और इसके पक्ष

ज्ञान क्या है।

ज्ञान एक अंग्रेजी शब्द है। जो सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता हैं। किसी विषय या वस्तु के सम्बन्ध में यथार्थ जानकारी करना ज्ञान का अर्थ बहुत व्यापक हैं। ज्ञान शब्द का प्रयोग किसी वस्तु या विषय के सम्बन्ध में उसकें वर्णन से होता हैं। ज्ञान का प्रयोग भौतिक या आध्यात्मिक जगत दोनों के सन्दर्भ में किया जाता हैं। भौतिक जगत की वस्तुओं का ज्ञान उसकें सम्पर्क में आनें पर किया जाता हैं। यह ज्ञान इन्द्रियों के अनुभव पर दिया जाता हैं।
इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान के सन्दर्भ में साक्ष्य तर्क, बुद्धि आदि का सहारा लिया जाता हैं। ज्ञान किसी तथ्य का अन्त: विश्लेषण करना तथा समझकर परिणाम निकालना ज्ञान है।

ज्ञान का प्रयोग मुख्य रूप सें दो अर्थो में किया जाता है।

1- व्यापक अर्थ में

2- संकुचित अर्थ मे

व्यापक अर्थ में ज्ञान ज्ञान शब्द का प्रयोग यथार्थ तथा अयथार्थ के रूप में किया जाता हैं।
इसकें विपरीत संकुचित अर्थ में ज्ञान का प्रयोग मात्र बोधक होता हैं। ज्ञान की प्रकृति किसी विषय वस्तु को प्रकाशित करना जिस प्रकार के दीपक आस-पास की वस्तुओं को प्रकाशित करता है।

Scanned with CamScanner

Notes

होता है। और जानवरो के ज्ञान का क्षेत्र सीमित होता है।

2. ज्ञान का सम्बन्ध ज्ञाता से होता है। ज्ञान का सम्बन्ध सदैव ज्ञाता से होता है।

ज्ञाता के अभाव मे ज्ञान का कोई महत्व नही होता संसार में अनेक प्रकार की वस्तुए होती हैं। जिनके महत्वपूर्ण स्थान जैसे - मानव चन्द्रमा के बारे में बस इतना ही जानता है। कि यह उपग्रह है। ज्ञान जो एक देवता के रूप में जाना जाता है।

जब मानव चन्द्रमा पर पहुच गये उसनें यह ज्ञात किया कि सुखी नदी पहाड़ तथा चट्टाने आदि है। इस सबका वर्णन पृथ्वी पर आकर बताया तो समस्त पृथ्वी वासियो को ज्ञान हुआ

3. ज्ञान का सम्बन्ध कौशल विकास है :- किसी क्षेत्र विशेष तथा कौशल विशेष का ज्ञान व्यक्ति को उस क्षेत्र का विशेषज्ञ कहलाएं जैसे एक व्यक्ति कृषि के बारे में जानता है तो कृषि विशेषज्ञ कहलायेगा, पशुओं का चिकित्सक पशुओं का उपचार कर सकता है। मानव का चिकित्सक मानव का उपचार कर सकता हैं।

4. ज्ञान एक अमूर्त वस्तु है।- ज्ञान को अमूर्त वस्तु के रूप में स्वीकार किया जाता है।

ज्ञान को किसी व्यक्ति के द्वारा नही देखा जा सकता जिस प्रकार संसार की अन्य वस्तुओं को देखते हैं। जैसे - गाय भैंस, बकरी आदि जानवरो को प्रत्यक्ष रूप सें देख सकते हैं। ज्ञान एक निराय वस्तु है। जिसको केवल अनुभव किया जा सकता है। जैसे मिठाई खाने के मीठापन का अनुभव किया जा सकता है।

Notes

5: ज्ञान एक मानसिक प्रक्रिया है:- ज्ञान का सम्बन्ध पूर्ण मानसिक अवस्था से होती है मानव द्वारा अनुभव तथा संवेदनाओं का सम्बन्ध ज्ञान से होता है। जैसे जेम्सवाट ने एक चाय की केतली को देखा उसका ढक्कन भाप की शक्ति से उठता और गिरता है। उसने अपनी क्रियाओं को स्वीकार कर लिया की भाप में शक्ति है। तब उन्होने भाप को मापने के ~~उसके~~ लिए उसने केतली ढक्कन के ~~ऊपर~~ ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा रख दिया जिससे भाप में इतनी शक्ति है उस केतली के ढक्कन को उठाने गिराने लगा शक्ति को भाप की सीमा के साथ घटाया बढ़ाया जा सकता है। जेम्सवाट द्वारा इंजन की खोज करने से सम्पूर्ण प्रक्रिया में मानसिक विचारों का विशेष योगदान रहा उसे मानसिक क्रिया कहते हैं।

6- ज्ञान के विषय आवश्यक है:- ज्ञान को प्राप्त करने के प्रक्रिया उस अवस्था में पूर्ण होती है। जब उसके लिए उस विषय की उपलब्धि हो। जैसे ईश्वर चन्द विद्यासागर गणित विषय के विद्यार्थी थे इस विषय में जितना महत्व ईश्वर चन्द्र विद्यासागर से है उससे उतना अधिक उस विषय से हो क्योंकि गणित विषय के अभाव में ईश्वरचन्द्र को ज्ञाता नहीं माना गया बल्कि गणित विषय ही ईश्वर चन्द विद्यासागर को ज्ञाता माना इस लिए भी विषय भी बहुत आवश्यक है।

Notes

सामान्य ज्ञान एवं विशिष्ट ज्ञान की तुलना

सामान्य ज्ञान एवं विशिष्ट ज्ञान की तुलना को निम्नलिखित दो प्रकारों से विभक्त करते है।

सामान्य ज्ञान 1- सामान्य ज्ञान का सम्बन्ध इस भौतिक जगत से होता है। जिससे हम जीवन यापन कर सके।

2- सामान्य ज्ञान सम्बन्धी विषय वस्तु को हम प्रत्यक्ष रूप से अपनी इन्द्रियों द्वारा देख सकते है।

3- सामान्य ज्ञान का सम्बन्ध लौकिक जगत से होता है। जो की हमारे व्यवहार से सम्बन्धित है।

4- सामान्य ज्ञान का प्रयोग प्रत्येक सामान्य व्यक्ति द्वारा किया जाता है। जैसे खेती करना, मशीन बनाना, मशीन चलाना आदि।

5- सामान्य ज्ञान को प्राप्त करने में कम समय लगता तथा यह सरल होता है।

6- सामान्य ज्ञान का उपयोग मानव जीवन में सुख-सुविधाओं के लिए किया जाता है।

7- सामान्य ज्ञान का प्रयोग, प्रदर्शन एवं वैज्ञानिकता की प्रधानता होती है।

विशिष्ट ज्ञान :- 1:- विशिष्ट ज्ञान का सम्बन्ध आध्यात्मिक जगत से होता है। जिसकी हम कल्पना करते हैं।

2:- विशिष्ट ज्ञान को हम आँखो से देख नही सकते बल्कि अनुभव कर सकते है।

3:- विशिष्ट ज्ञान का सम्बन्ध पारलौकिक जगत से होता है। जो सांसारिक जगत से परे हो।

Scanned with CamScanner